आधुनिक विचारक

M. N. ROY

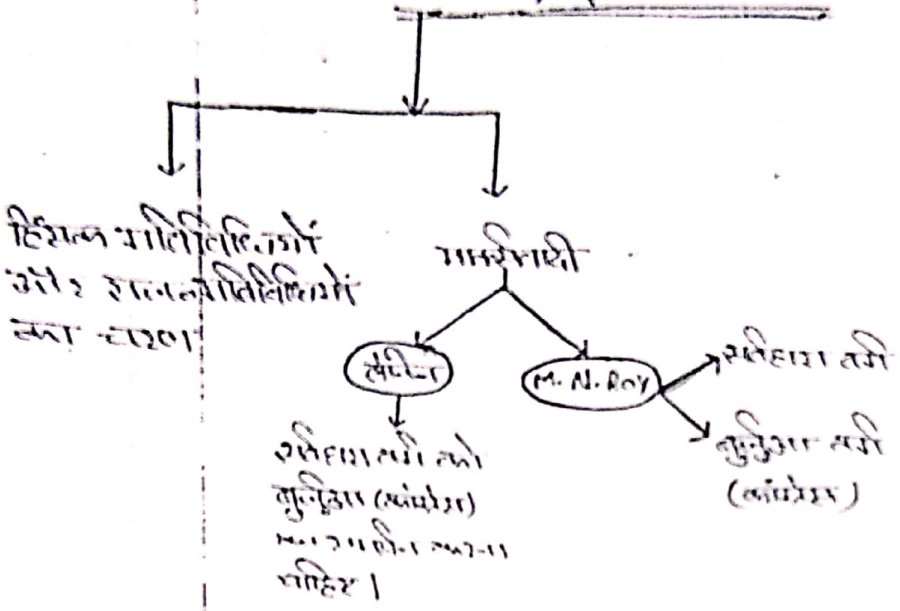

जीवन का प्रथम चरण -

M.N. रॉय जीवन के पहले चरण में कट्टर राष्ट्रवादी थे, वे हिंसक क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल थे और उन्होंने बम और पिस्तौल की राजनीति का समर्थन किया और राजनैतिक डकैतियों और हिंसक डकैतियों में सक्रिय रूप से संलग्न थे। उन्होंने प्रथम चरण में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध निम्न दृष्टिकोण अपनाया -

(A) उनके अनुसार अंग्रेजी शासन का खात्मा शक्ति द्वारा हो सकता है।

(B) हिंसा का सामना हिंसा से करना होगा।

(C) ब्रिटिश साम्राज्यवाद को समाप्त करने वाला हर कार्य उचित है।

Scanned with CamScanner

(1) उन्होंने नरमपंथियों का प्रबल विरोध किया, उनके अनुसार संवैधानिक साधनों से ब्रिटिश साम्राज्यवाद को समाप्त करना सम्भव नहीं है।

द्वितीय चरण –

M.N. राय भारतीय विचारकों में सबसे नीति और अग्रणी विचारक हैं, इन्होंने भारतीय आध्यात्मिकता और धार्मिकता का जोरदार खण्डन किया और पहली बार उन्होंने भारतीय इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या प्रस्तुत की। और मार्क्सवादी भारतीय इतिहास का विश्लेषण व्यापक रूप में करते हैं। उन्होंने स्वराज पार्टी के नेता C.R. दास, मोतीलाल नेहरू को संकीर्ण नेताओं का समर्थक कहा, इनके अनुसार ये भारत में सामन्तवादी शासन के समर्थक हैं। उन्होंने "After Math of Non Cooperation" में लिखा कि असहयोग आन्दोलन इसलिए स्थगित हो गया क्योंकि भारतीय बुर्जुआ डरपोक है और कांग्रेस क्रान्तिकारी भूमिका नहीं निभा सकती, उनके अनुसार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और ब्रिटिश साम्राज्यवादी बुर्जुआ में सांठ-गांठ है ∴ भारत में साम्राज्यवाद के विरुद्ध सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति सबसे बेहतर विकल्प है। 1924 में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की 5 वीं कांग्रेस में M.N. रॉय ने कहा कि भारत में साम्यवादी क्रान्ति के लिए सर्वहारा वर्ग का विकास करना होगा और कांग्रेस से किसी भी प्रकार का सहयोग लेना घातक होगा। उन्होंने कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की छठी बैठक में कांग्रेस के विरोध का पूर्ण समर्थन किया।

Scanned with CamScanner

यद्यपि ध्यान देने योग्य है कि - भारत में हरदत्त मोहर्षि जैसे - व्यक्तियों के अनुसार भारत में साम्यवादी दल स्वतन्त्र रूप से विकसित होना चाहिए। श्रीपाद डेन्गे ने तो यहाँ तक कहा कि - भारतीय साम्यवाद बोल्शेविकवाद नहीं है और हम लोग रूसी नहीं हैं, उनके अनुसार भारतीय विश्व साम्यवादियों के साथ हैं लेकिन बोल्शेविक के साथ नहीं हैं। परन्तु M.N. Roy ने यह दृष्टिकोण स्वीकार नहीं किया, उनके अनुसार भारतीय सर्वहारा वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के आन्दोलन से पृथक और स्वतन्त्र नहीं हो सकती और जो भारतीय साम्यवादी आन्दोलन को पृथक रखना चाहते हैं वे साम्यवादी आन्दोलन के दुश्मन हैं। उन्होंने साम्यवाद के किसी भारतीय संस्करण का विरोध किया। 1927 में शौकत उस्मान, मुजफ्फर अहमद जैसे साम्यवादी नेताओं के अनुसार भारतीय साम्यवादी दल को मास्को से निर्देशन प्राप्त होगा। यद्यपि डांगे ने पहले यह कहा था कि वे भारतीय साम्यवादी हैं, वे बोल्शेविक नहीं हैं।

M.N. राय ने "The future of Indian Politics" में लिखते हुए कहा कि भारत में सर्वहारा वर्ग में मजदूर, छोटे सर्वहारा और किसानों को भी सम्मिलित किया जाएगा, उन्होंने साम्यवाद के तीन सिद्धान्त, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद का पूर्ण समर्थन किया। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध का

विश्लेषण करते हुए कहा -

(A) भारत में पूँजीवाद का विकास हो रहा है।

(B) 1857 के विद्रोह को उन्होंने सामन्तवादी सत्ता द्वारा अपनी सत्ता को हथियाने के प्रयास के रूप में वर्णित किया।

(C) इनके अनुसार भारत में सामंतवाद का पतन हो रहा है, उन्होंने ब्रिटिश शासन द्वारा किए गए, संवैधानिक सुधारों को आलोचित करा और इनके अनुसार ब्रिटिश शासन बुर्जुआ वर्ग को खुश करने हेतु प्रयास कर रहा है, तथा ऐसे सुधार किए जा रहे हैं जिससे उनका शासन कायम रहे। उनके अनुसार विश्व में साम्यवादी क्रान्ति आवश्यक है और उन्होंने भारत और चीन, जैसे देशों में क्रान्ति को वैश्विक साम्यवाद क्रान्ति के लिए आवश्यक माना। इनके अनुसार पूँजीवादी देशों में पूँजीवाद बने रहने का कारण साम्राज्यवाद है और साम्राज्यवादी व्यवस्था में उपनिवेशों का शोषण हो रहा है। और साम्राज्यवाद की समाप्ति के बाद पूँजीवादी देशों में क्रान्ति अवश्य होगी ∴ भारत में साम्यवादी क्रान्ति का एक वृहत्तर उद्देश्य पूरे विश्व में साम्यवादी क्रान्ति सम्पन्न करना है।

M.N. राय के अनुसार भारत में साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में सर्वहारा वर्ग की भूमिका निर्णायक होगी और सर्वहारा वर्ग ही क्रान्ति का नेतृत्व करेगा। अतः इनके अनुसार कांग्रेस के साथ किसी भी प्रकार का समझौता/सहयोग नहीं है।

भारत में सर्वहारा वर्ग क्रान्ति करने में सक्षम थी। यह ध्यान देने योग्य है कि - लेनिन का दृष्टिकोण, M.N. रॉय से भिन्न था और लेनिन के अनुसार भारत में साम्यवादियों को बुर्जुआ वर्ग से सहयोग लेना चाहिए। क्रान्ति के पश्चात् साम्यवादी पूरी व्यवस्था पर नियंत्रण स्थापित कर लेंगे। यद्यपि लेनिन ने कहा कि क्रान्ति का नेतृत्व सर्वहारा वर्ग के हाथों में होगा।

तृतीय चरण -

उपनिवेशवाद

→ शोषण / स्वतन्त्रता

→ विकास

माध्यम = शिक्षा

व्यवस्था

→ विकेन्द्रित शासन

→ कृषि क्षेत्र का विकास

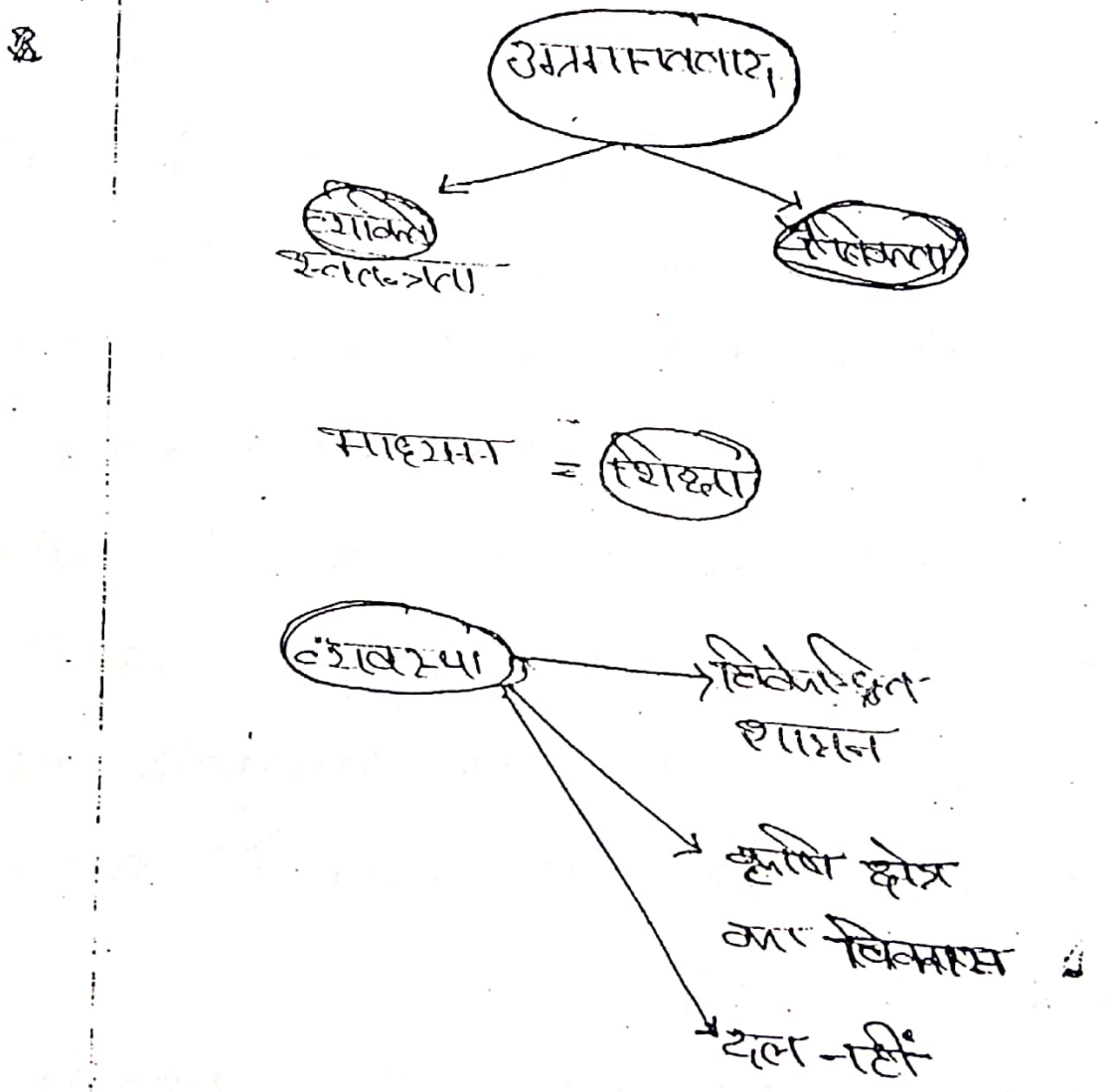

→ रेल - लाइन

Scanned with CamScanner

नव मानववाद -

मानववादी विचारधारा पाश्चात्य जगत में पुनर्जागरण एवं सुधार आन्दोलन का परिणाम है। लॉक जैसे पाश्चात्य विचारकों ने मानववादी संकल्पना को पश्चिमी चिन्तन में प्रभावी रूप में स्थापित किया, इसके अनुसार मानव बुद्धि से समस्त विश्व का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है और मानव बुद्धि का प्रयोग करते हुए समस्त दुखों से छुटकारा पाया जा सकता है। M.N. रॉय का नवमानववाद/उग्रमानववाद/आमूलमानववाद/रूपात्मक वैज्ञानिक मानववाद, मार्क्स के मानववादी विचार, गांधी के आध्यात्मिक मानववाद और नेहरू के वैज्ञानिक मानववाद से भिन्न है। मानववाद का मूल अभिप्राय व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता में दृढ़ विश्वास है। मानववादी विचारधारा में व्यक्ति को स्वयं में साध्य माना जाता है और सरकार, समाज और राज्य में व्यक्ति का महत्व निर्णायक ही M.N. रॉय की नव-मानववाद की विशेषताएँ निम्न हैं -

① उनके मानववाद का मूल आधार नैतिक व्यक्ति और मानवीय स्वतंत्रता है। इन्होंने मार्क्सवाद के आर्थिक विश्लेषण को अस्वीकार कर दिया तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की राष्ट्रवादी विचारधारा का भी परित्याग किया।

② उनके अनुसार मानवीय इतिहास में स्वतंत्रता का सर्वाधिक महत्व है और मानव का मूल उद्देश्य केवल उसके भौतिक परिवेश को नियंत्रित करना ही नहीं अपितु स्वतंत्रता प्राप्त करना है। उनके अनुसार

Scanned with CamScanner

संविदा का अधिनायकवाद मानवीय स्वतंत्रता हेतु प्रतिकूल है। फासीवाद, नाजीवाद की उन्होंने तीव्र आलोचना की और इसे समूचे मानवीय मूल्यों के विरुद्ध कहा और उन्होंने आधुनिक समाज में संसदीय लोकतंत्र को स्वतंत्रता के प्रतिकूल माना।

③ उनके अनुसार मानव के स्वतंत्र स्वभाव के कारण राज्य का निर्माण हुआ। यह न तो समझौते का परिणाम है न ईश्वर की देन है। समाज तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता में कोई विरोधाभास भी नहीं है।

④ M.N. रॉय के अनुसार - राज्य के विचार निम्न तीन ~~विचार~~ आधारों पर आश्रित हैं -

(i) बहुलवाद (ii) विकेन्द्रीकरण - वे विकेन्द्रीकृत राज्य के समर्थक थे, उनके अनुसार न तो पूर्ण शक्तिशाली राज्य उचित है और न ही वे राज्य के सम्पूर्ण उन्मूलन के समर्थक थे।

(iii) लोकतंत्र - उन्होंने दलविहीन लोकतंत्र को आदर्श माना, जिसमें राज्य की गतिविधियों में ~~[illegible]~~ नागरिकों की रुचि और सक्रिय सहभागिता होनी चाहिए।

⑤ समाज को पुनर्गठित करते हुए शोषणमुक्त समाज का निर्माण होगा, उत्पादन व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार होगा और आर्थिक

Scanned with CamScanner

गतिविधियों का प्रबंध नियोजित अर्थव्यवस्था के द्वारा होगा, उन्होंने औद्योगीकरण का पूर्ण समर्थन किया, परन्तु उनके अनुसार भारत में औद्योगीकरण सफल होने के लिए पहले कृषि क्षेत्र में औद्योगीकरण होना चाहिए।

(6) उन्होंने नव मानववाद में शिक्षा को ज्यादा महत्व प्रदान किया, उनके अनुसार समाज में शिक्षा द्वारा क्रान्ति सम्भव है अतः उन्होंने की हिंसक और सशस्त्र क्रान्ति की संकल्पना को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया। उनके अनुसार आने वाले विश्व में शिक्षा के आधार पर क्रान्ति होगी।

(7) राय ने नवमानववाद में वैज्ञानिक ज्ञान पर अत्यधिक बल दिया गया, उन्होंने भारतीय आध्यात्म को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया, उनके अनुसार सम्पूर्ण विश्व व पुनर्निर्माण वैज्ञानिक ज्ञान के बिना नहीं हो सकता। उनके अनुसार वैज्ञानिक ज्ञान के बिना कोई व्यक्ति पूर्ण नहीं हो सकता।

(8) उन्होंने नव मानववाद में संकीर्ण राष्ट्रीयता और संसदीय शासन को मिथ्या संकल्पनाएँ माना। उन्होंने शक्ति के विकेन्द्रीकरण और व्यापक स्तर पर लोकतंत्र का समर्थन किया, उनके अनुसार शक्ति केन्द्रीकरण से ... है।

Scanned with CamScanner